कला बाज़ार और सरोकारः एक विस्तृत विश्लेषण

डॉ0 पूनम देवी
पूर्व शोध छात्रा
ललित कला विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ, उ0प्र0
ईमेलः khushbuchauhanaartist@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 07.05.26
Approved: 28.06.26

डॉ0 पूनम देवी

कला बाज़ार और सरोकारः एक विस्तृत विश्लेषण

Vol. XVII, Sp. Issue June.2026
Article No.17, Pg. 134-142

Similarity Check: 03%

Online available at
https://anubooks.com/special-issues?url=jgv-si-rbd-bijnor-june-2026

DOI: *https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI06.017*

सारांश

कला केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि यह समाज, संस्कृति और मानवीय संवेदनाओं का दर्पण भी है। आज के वैश्वीकरण और उपभोक्तावादी दौर में कला एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि के रूप में भी उभरी है। कला बाज़ार (Art Market) का विस्तार न केवल कलाकारों की पहचान और आय का स्रोत बना है, बल्कि इसने कला के स्वरूप, उद्देश्य और सरोकारों को भी प्रभावित किया है। ऐसे में यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या कला केवल बिकने वाली वस्तु बनकर रह गई है, या अभी भी वह समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभा रही है।

कला बाज़ार से तात्पर्य उन सभी गतिविधियों से है जिनके माध्यम से कला का क्रय–विक्रय होता है– जैसे आर्ट गैलरी, नीलामी घर, कला मेले, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म आदि। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर Christie's और Sotheby's जैसे नीलामी घर कला बाज़ार के प्रमुख केंद्र हैं, जबकि भारत में Saffronart जैसे प्लेटफॉर्म कला के व्यापार को नई ऊँचाइयों तक ले गए हैं।

कला बाज़ार में पेंटिंग, मूर्तिकला, इंस्टॉलेशन, डिजिटल आर्ट आदि विभिन्न माध्यमों की कला वस्तुएं खरीदी और बेची जाती हैं। यह बाज़ार अब केवल भौतिक गैलरियों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि डिजिटल माध्यमों और NFT (Non-Fungible Tokens) के माध्यम से वैश्विक स्तर पर फैल चुका है।

मूख्य शब्द

कला बाज़ार और सरोकार, अभिव्यक्ति, समाज, संस्कृति, संवेदनाओं, दर्पण, वैश्वीकरण, उपभोक्तावादी, अकादमी, निगलामी घर

**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of JGV.*

https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI06.017

प्रस्तावना

कला मानव मन में उत्पन्न होने वाले भावों, कल्पनाओं एवं रंग–बिरंगे विचारों को अभिव्यक्त करने का एक अत्यन्त आकर्षक एवं रोचक माध्यम हैं जिसके अन्तर्गत ही एक कलाकार अपनी कल्पनाओं एवं भावनाओं से सम्पूर्ण संसार को प्रभावित एवं भावविभोर करता है। अनेक विद्वानों एवं कला समीक्षकों ने कलाओं का वर्गीकरण किया है किन्तु कलाओं के वर्गीकरण में मतैक्य होना सम्भव नहीं है। पाश्चात्य जगत में कला को दो श्रेणीयों में रखा गया है– उपयोगी कला एवं ललित कलाएँ। परम्परागत रूप से सात प्रमुख कलाऐं मानी गई है जिनमें स्थापत्य कला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीतकला, काव्यकला, नृत्यकला एवं रंगमंचकला आदि कलाएँ आती है।

इन कलाओं में श्रेष्ठ कला के रूप में चित्रकला को प्रथम श्रेणी में रखा गया है। चित्रकला मानव जीवन को सत्यम, शिवम सुन्दरम से समन्वित करती है। कला के द्वारा ही बुद्धि आत्मा का सत्य स्वरूप स्पष्टतः झलकता है। कला उस विशाल समुद्र की तरह है जिसका कोई किनारा न हो, इतनी विशाल, इतनी विस्तृत जो अपनी लहरों में अनेक विधाओं एवं कल्पनाओं को अपने में समेटे हुए है।

आधुनिक युग में कला केवल कलाकारों की भावनात्मक अभिव्यक्ति व कल्पनाओं को प्रदर्शित करने का माध्यम ही नही रह गया है बल्कि आजिविका का भी एक सशक्त माध्यम बन गया है। कुछ समय पहले कलाकार अपनी रूचि एवं स्वांतः सुखाय के लिए चित्रांकन करते थे किन्तु जैसे–जैसे समय बीतता गया वैसे–वैसे कला का स्तर भी बदलता गया है। आज कला कलाकारों का व्यवसाय एवं रोजगार का साधन भी बन गया है। जिसके फलस्वरूप अधिकांश कलाकार अपने हुनर के माध्यम से अपना आर्थिक पक्ष मजबूत कर रहे है। प्रत्येक कलाकार की इच्छा होती है कि उसका कार्य अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाएँ और समाज, देश व संसार में अपने नाम को प्रसिद्ध करें। किन्तु वहाँ तक पहुंचने के रास्ते में कई सीढ़ीयाँ है, जिसमें कलादीर्घाएं होती है। चित्रकला का बाजार दिन–प्रतिदिन विस्तृत होता जा रहा है। अधिकांश शहरों में कला मेलों का आयोजन होने लगा है जहाँ कलाकार किराये पर कुछ जगह लेता है जिनमें चित्रकला प्रदर्शनियाँ लगाई जाती है। प्रत्येक बड़े शहर में कला दीर्घाएं खोली जा रही है।

यह पूर्णतः सत्य है कि भारत में अन्तर्राष्ट्रीय नीलामी कम्पनियों के आने के पश्चात निरन्तर कला को व्यवसायिक बनाने की कोशिश कर रही है। क्रिस्ती और सुदबी जैसी कम्पनियों ने जैसे–जैसे भारतीय कलाकारों की कृतियों की कीमतें तय की हैं तथा उन्हें नीलामी के दायरें में लिया है, वैसे–वैसे यहाँ कला दीर्घाओं के खुलने में बढ़ोतरी होती जा रही है। कुछ भारतीय दीर्घाओं ने अपनी एजेंसियाँ भी शुरू कर दी है, जो कला की कीमत तय करती है और जिससे कलाकृतियों की नीलामी आसानी से हो जाती है।

भारत में कला को एक विस्तृत बाजार के रूप में बदल दिया है जिसके कारण कला को आज केवल एक 'बाजार में बिकने वाली वस्तु' की तरह देखी जाने लगा है। यदि एक दृष्टि दिल्ली पर डाली जायें तो पिछले कुछ सालों में यहां कला दीर्घाएं जाल की तरह बिछ गई है। इस प्रकार की कला दीर्घाएं देश के महानगरों में तीव्रता से खुलती जा रही है किन्तु इनका कार्य कलाकृतियों को संरक्षण देकर उनका विकास करना नहीं है, बल्कि कलाकृतियों का बाजारीकरण करके मोटी कमाई करना हो गया है। आज अधिकांश कलादीर्घाएं युवा एवं नये कलाकारों को लोभ में डालकर उन्हें अपने लाभ के लिए प्रेरित करती हैं कि वे उनकी कला दीर्घाओं में प्रदर्शनियों का आयोजन करें और अधिकांश कलाकार भी अपनी कलाकृतियों को बेचने के लिए एवं व्यवसाय करने के लिए तैयार रहते है तथा जब कलाकार अपनी कलाकृतियों की प्रदर्शनी कलादीर्घाओं में लगाते है तो उनकी बिकने वाली कृतियों पर दीर्घाएं तीस से चालीस प्रतिशत तक लाभ लेती है और कभी–कभी तो कलाकारों की कृतियों की कीमत भी कला दीर्घाएं ही तय करती है कुछ कला दीर्घाएं बिक्री से बची कृतियों को अपने पास ही रख लेते हैं और कलाकारों को यह कह देते है कि इनकी बिक्री होने के पश्चात आप अपना हिसाब कर लेना किन्तु महीनों बीत जाने के बाद भी कलाकारों को उनकी कृतियों का हिसाब मिलना तो दूर, कला दीर्घाओं के स्वामियों के दर्शन भी दुर्लभ हो जाते है। यदि हम यह कहे कि कला बाजार

से कलाकारों को एक व्यवसाय, रोजगार एवं आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है किन्तु वही दूसरी ओर मन में एक प्रश्न यह भी उठता है कि यदि कला को ही बाज़ार में बदल दिया जाये तो कला का क्या अस्तित्व रह जायेगा। यह एक चिन्ताजनक विषय भी है। किन्तु कला को एक बड़ा बाज़ार और कलाकारों को उनकी कृतियों का खरीदार मिले और प्रत्येक कलाकार अपने हुनर के बलबूते पर रोजगार प्राप्त करके अपनी आर्थिक दशा को सुधारता है तो इसमें कोई बुराई भी नहीं है, लेकिन इसके साथ ही हमारी संस्कृति का प्रश्न भी हमसे जुडा हुआ है और कला हमारी चेतना एवं संस्कारों से गहरा ताल्लुक रखती है। यदि कला को इसी प्रकार प्रायोज्य वस्तु में बदल दिया गया और कला दीर्घाओं को अपनी मनमर्जी की छुट दे दी जाये तो एक दिन वे भारतीय समकालीन कला को विकृत व भद्दा तो करेंगी ही साथ ही हमारी प्राचीनतम धरोहरों के लिए भी खतरा बन जाएंगी। यदि समकालीन कला बाजार पर ध्यान दिया जाये तो कला की राजनीति और कला का बाज़ार आज कला से कही ज्यादा चर्चा का विषय बन गया है। यह प्रश्न मन में अवश्य उठता है कि आखिर यह कला किसके लिए है! क्या केवल समाज के उस 'प्रभू वर्ग' के लिए, जो कला की समझ के कारण नही, वरन् उससे भविष्य में प्राप्त होनें वाले लाभ के कारण उसे खरीदता है? क्या कला का आम आदमी से कुछ लेना–देना है अथवा कला सिर्फ कला दीर्घाओं, कॉरपोरेट घरानों और अकादमियों में लटकाने जाने के लिए ही है? सही मायने में ये समस्त प्रश्न कला बाज़ार के लिए कोई महत्व नहीं रखते। उसके लिए केवल यह महत्वपूर्ण है कि कला के माध्यम से धन अर्जित करना है। कला के अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार सहित भारतीय बाज़ार की भी यही स्थिति है।

कला दीर्घाओं की व्यवसायिक मानसिकता के विरोध में ही जब 1917 में मार्शल डूसां ने चीनी मिट्‌टी से एक यूरिनल (मूत्रपात्र) को न्यायॉर्क की एक कला दीर्घा में प्रदर्शनी के लिए भेजा था तो विश्वकला में एक बड़ी प्रतिक्रिया हुई थी। जिसमें मार्शल डूसां ने अपने जवाब में कहा था कि जब कलाकार से वस्तु की मांग हो रही है और जो मांग पर आधारित है तो कलाकृति की मौलिकता का मतलब ही क्या है। मार्शल डूंसा की यह भी दलील थी कि मांग पर निर्मित कला से अच्छा तो वह यूरिनल अर्थात् मूत्रपात्र है जो सबके उपयोग का है। इसका शीर्षक मार्शल डुंसा ने फुव्वारा रखा था। प्रतिरोध की यह प्रक्रिया संग्रहालयों और कला के व्यवसायिक निगमों के विरूद्ध पिछले सौ वर्षों से जारी है।

कला बाज़ार पर आधारित जो संस्कृति आज विकसित हुई है उसमें कलाकृतियों के दाम अचानक बढ़ गए है। विदेशी कलाकारों के ही नहीं अपितु आज भारतीय कलाकारों की कलाकृतियां भी लाखों–करोडों में बिकने लगी है। आज विश्वभर की कलादीर्घाएं आनलाईन प्रदर्शनियों की शुरूआत कर रही है उससे कला तो बाजारोन्मुख हुई ही है, कलाकार भी सृजन की बाज़ारी भाषा बनाने लगे है, जिसकी बाजार में मांग बढ़ रही है। कला का यह भूमण्डलीय समरूपीकरण यानी भूमण्डलीयकरण है।

कला के इस बाजारोन्मुख भूमण्डलीकरण ने एक ऐसी संस्कृति का विकास करना प्रारम्भ कर दिया है जिसमें अनेक कला दीर्घाएं उपभोक्ता और उत्पादक के रूप में कार्य करने लगी है। समकालीनता की यही आर्थिक अभिव्यक्ति हैं। ऐसी जिसमें कला की बजाय कलाकार प्रमुख हो गया है। इसका अभिप्राय यह है कि बाजार कलाकृति को उसकी गुणवत्ता के लिहाज से नहीं अपितु ब्राण्ड को भुनाने में लगा है। एक ओर प्रसिद्ध कलाकारों की कलाकृतियां मनमानी कीमतों में बिकने लगी है वहीं दूसरी ओर ऐसे कलाकार भी है जिनका बाजार से सीधे कोई सरोकार नहीं है वह निरन्तर हाशिए पर चले जा रहे है जबकि कला अब बाजार की वस्तु तो बन ही गई है तो यह स्वाभाविक ही है कि कलादीर्घाएँ कला की उत्कृष्टता भी बहुत से स्तरों पर स्वयं ही तय करने लगी है। कलादीर्घाओं की कुछ ऐसी मनमानी चल रही है कि जिस कलाकार को चाहे वह आसमान पर बैठा दे और जिसे चाहे नीचे उतार दे।

जो कला और कलाकारों के लिए एक चिन्ता का विषय बनता जा रहा है। कला आज तीव्रता से बाजार की वस्तु मात्र बनती जा रही है, यह अत्याधिक महत्वपूर्ण है कि कलाकृतियों का मूल्यांकन उसमें निहित कला की गम्भीरता के आधार पर किया जाये तो यह एक बेहतर तरीका है कलाकारों और उनकी कलाकृतियों के लिए। यह इसलिए भी आवश्यक है कि इसी से कला सामाजिक सरोकारों से जुड़ पाएगी। यदि कलाकार के आधार पर ही उनकी कला का

मूल्यांकन किया जाना है तो फिर उस कला का भविष्य दीर्घकालिक नहीं हो सकता क्योंकि कलाकृतियों को देखने वाले अर्थात दर्शक भी पहले कला से प्रभावित होते है तत्पश्चात कलाकार से प्रभावित होते है किन्तु कला बाजार ने कला एवं कलाकार दोनों के समीकरण बदल दिये हैं।

बाजारोन्मुख कला में कुछ नया रचे जाने की भी जैसे होड़ मची है। कला की वैश्विक भाषा के अन्तर्गत यह होड केवल कैनवास पर ही नहीं है बल्कि परफार्मेन्स, मिक्स मीडिया, फोटोग्राफी, इन्स्टॉलेशन जैसे माध्यमों के अन्तर्गत भी है। वैसे कुछ इस प्रकार भी हो रहा है कि जो कुछ पश्चिम में निर्मित किया जा रहा है वही पूर्व के देश में भी निर्मित करने में लगे हुए है और पूर्व के देश जो बना रहे है वही पश्चिम में बन रहा है। कला की भाषा, कला का स्वरूप लोगों की समझ से कोई सरोकार नही रखती वरन् बाजार से अत्याधिक सरोकार रखने लगी है। बाजार के व्यक्तिवादी कठघरे में कला इतनी संकीर्ण होती चली जा रही है कि उसे समाज से एक मुक्त वातावरण भी नहीं मिल पा रहा है। यह सही है कि कलाएं आदान–प्रदान करने से समृद्ध होती है–भारतीय कला पश्चिम से कुछ सीखे ओर पश्चिम भारत से।

कलाएँ मानव के वातावरण से सीधे जुडी होती है। समाज की प्रत्यक्ष आधुनिकता एवं उसमें परम्परा की प्रेरणा यदि किसी कलाकृति में होती है तो ही वह सही मायने में कला की आधुनिकता कही जाएगी। यहां आधुनिकता का अर्थ अनुकरण अथवा अन्य दूसरी कला के हूबहू अपनाकर अपने वातावरण में सृजन करना नहीं है। हर काल को उसका समकाल, प्रतीक, चिन्ह एवं अभिव्यंजना ही प्रेरित करती है। आवश्यक तो यह है कि कलाकार कला में अपने समय की आवाज को सुने और उससे रिश्ता जोडे। मुख्य बात किसी भी कला की यह मौलिक अभिव्यंजना ही है।

कला बाज़ार एक आकर्षक और गतिशील प्रणाली है। यह वह स्थान है जहाँ रचनात्मकता और वाणिज्य का मिलन होता है, इतिहास आधुनिक रुझानों से जुड़ता है, और उत्कृष्ट कृतियाँ लाखों डॉलर में बिकती हैं। सदियों से फैले इस कला बाज़ार का विकास सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करते हुए हुआ है। मध्ययुगीन यूरोप के हलचल भरे बाजारों से लेकर आज के शानदार नीलामी घरों तक, कलाकृति बाजार की यात्रा उतनी ही जटिल है जितनी कि वह कला जिसका यह प्रतिनिधित्व करता है।

कला बाजार का विकास

कला बाज़ार में सदियों से गहन परिवर्तन हुए हैं, जो समाज, संस्कृति और वाणिज्य के विकास को प्रतिबिंबित करते हैं। मध्ययुगीन यूरोप में इसकी साधारण शुरुआत से, जहाँ कला मुख्य रूप से चर्च और अभिजात वर्ग द्वारा बनवाई जाती थी, से लेकर आज के फलते–फूलते वैश्विक बाजार तक, कला बाज़ार ने लगातार नई मांगों और अवसरों के अनुरूप खुद को ढाला है।

यह खंड इसके रूपांतरण के प्रमुख चरणों की पड़ताल करता है, इसकी जड़ों से लेकर आधुनिक नीलामी घरों के उदय तक, और इस बात पर प्रकाश डालता है कि कलाकृति बाजार की नींव कैसे रखी गई थी।

प्रारंभिक कलात्मक बाजार

कला बाजार की जड़ें मध्य युग के उत्तरार्ध तक फैली हुई हैं। 14वीं शताब्दी में फ़्लैंडर्स के ब्रुग्स और घेंट जैसे शहरों में कला, व्यापार फलने–फूलने लगा। यहाँ, जान वैन आइक जैसे कलाकारों को धनी व्यापारियों के बीच संरक्षक मिले, जिससे वे शाही या धार्मिक परियोजनाओं की सीमाओं से परे चले गए।

पुनर्जागरण काल तक, कला कार्यशालाओं के फलने–फूलने के साथ कला बाज़ार का विस्तार हुआ। कला संघों ने इस बढ़ते कलात्मक बाज़ार को विनियमित करने, गुणवत्ता सुनिश्चित करने और निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी अवधि के दौरान, वाणिज्यिक कला व्यापार के पहले संकेत दिखाई देने लगे।

आधुनिक कला बाजार का जन्म

17वीं शताब्दी का डच गणराज्य एक परिवर्तनकारी दौर था। पहली बार, कला मध्यम वर्ग के उन लोगों के

लिए एक सुलभ वस्तु बन गई, जिनके पास खर्च करने योग्य आय थी। रेम्ब्रांट और वर्मीर जैसे कलाकारों ने खुले बाज़ार को ध्यान में रखते हुए, केवल कमीशन के लिए नहीं बल्कि बिक्री के लिए कलाकृतियाँ बनाईं।

18वीं और 19वीं शताब्दी में क्रिस्टीज़ (1766) और सोथबीज़ (1744) जैसे नीलामी घरों का उदय हुआ। इन संस्थानों ने कला उद्योग में क्रांति ला दी, नीलामियों को औपचारिक रूप दिया और कीमतों को निर्धारित करने के तरीके के रूप में बोली लगाने की शुरुआत की। 20वीं शताब्दी में वैश्वीकरण ने कला बाजार को और भी विस्तारित किया, जिससे संग्राहक और व्यापारी महाद्वीपों के पार जुड़ गए।

कला बाजार के घटक

कला बाजार दो अलग–अलग लेकिन आपस में जुड़े घटकों के माध्यम से संचालित होता हैः प्राथमिक बाज़ार और द्वितीयक बाज़ार। प्रत्येक घटक कला के मूल्य और उसकी सुलभता को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे कलाकारों और संग्राहकों दोनों के लिए अवसर बनते हैं। इन घटकों को समझने से कला उद्योग को संचालित करने वाली प्रक्रियाओं की जानकारी मिलती है, जिसमें कलाकृति की पहली बिक्री से लेकर नीलामी में उसकी पुनर्विक्री तक की प्रक्रिया शामिल है।

प्राथमिक बाजार

प्राथमिक बाज़ार वह स्थान है जहाँ कलाकृतियाँ पहली बार बेची जाती हैं। दीर्घाएँ और डीलर यहाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कलाकार अपनी कृतियों को संग्राहकों के सामने प्रदर्शित करने और बेचने के लिए इन संस्थाओं पर निर्भर रहते हैं। ऐतिहासिक रूप से, कला बाज़ार कलाकारों और संरक्षकों के बीच सीधे संबंधों पर निर्भर था। आज, दीर्घाएँ प्रचार और मूल्य निर्धारण का अधिकांश कार्य संभालती हैं।

उभरते कलाकारों को अक्सर प्राथमिक बाजार में पहली पहचान मिलती है। यह चरण उनके करियर को शुरू करने और उनके काम के मूल्य के लिए एक आधार स्थापित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

द्वितीयक बाजार

द्वितीयक बाज़ार में कलाकृतियों की पुनर्विक्रय शामिल है। नीलामी घर इस क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाते हैं और स्थापित उत्कृष्ट कृतियों की उच्चस्तरीय बिक्री का संचालन करते हैं। प्राथमिक बाज़ार के विपरीत, द्वितीयक बाज़ार में कीमतें अक्सर बहुत अधिक होती हैं, जो कलाकृति की उत्पत्ति और सांस्कृतिक महत्व को दर्शाती हैं।

उदाहरण के लिए, लियोनार्डो दा विंची की कृति ''साल्वाडोर मुंडी'' 2017 में नीलामी में चौंका देने वाली 450 मिलियन डॉलर में बिकी। इस तरह की रिकॉर्ड तोड़ बिक्री वैश्विक स्तर पर कलाकृति बाज़ार के प्रभाव को रेखांकित करती है।

कला बाजार में प्रमुख रुझान

किसी भी उद्योग की तरह, कला बाज़ार भी समय के साथ विकसित होता रहता है। आर्थिक उछाल और मंदी से लेकर कलात्मक प्राथमिकताओं में बदलाव तक, कई कारकों ने दशकों से कला उद्योग की दिशा तय की है। आज, डिजिटलीकरण और वैश्वीकरण कला बाजार की सीमाओं को फिर से परिभाषित कर रहे हैं, जबकि एनएफटी और समकालीन कला जैसे रुझान चर्चाओं पर हावी हैं। कला बाज़ार के ऐतिहासिक और उभरते रुझानों का अध्ययन इसके अतीत, वर्तमान और भविष्य की एक झलक प्रदान करता है।

कला बाजार के रुझान विभिन्न युगों में

1980 के दशक में सट्टेबाजी के चलते कला की कीमतों में भारी उछाल आया। उदाहरण के तौर पर, जापानी संग्राहकों ने इस दौरान वान गॉग और पिकासो की प्रतिष्ठित कृतियाँ खरीदीं। हालांकि, 1990 के दशक की शुरुआत में बाजार धराशायी हो गया, जिससे भारी वित्तीय नुकसान हुआ।

हाल के दशकों में, समकालीन और युद्धोत्तर कला ने प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया है। जीन–मिशेल बास्कियाट और बैंक्सी जैसे कलाकारों की कृतियों की कीमतें आसमान छू रही हैं। संग्राहकों का ध्यान पारंपरिक उत्कृष्ट कृतियों से हटकर उन कलाकृतियों की ओर केंद्रित हो गया है जो वर्तमान सांस्कृतिक और सामाजिक विषयों से मेल खाती हैं।

डिजिटलीकरण का प्रभाव

डिजिटल क्रांति ने कला उद्योग पर गहरा प्रभाव डाला है। क्रिस्टीज और सोथबीज़ जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ने नीलामी को वैश्विक दर्शकों के लिए सुलभ बना दिया है। वर्चुअल गैलरी संग्राहकों को अपने घरों में आराम से बैठकर कलाकृतियों को देखने और खरीदने की सुविधा देती हैं।

एनएफटी (नॉन–फंजिबल टोकन) के उदय ने कला बाजार में एक नया आयाम जोड़ दिया है। ब्लॉकचेन तकनीक से जुड़े ये डिजिटल एसेट, संग्रहणीय वस्तुओं की एक नई श्रेणी का निर्माण करते हैं। हालांकि एनएफटी विवादास्पद हैं, लेकिन वे कला की खरीद–बिक्री और मूल्यांकन के तरीके में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतिनिधित्व करते हैं।

क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य और उभरते बाज़ार

यूरोप और उत्तरी अमेरिका जैसे स्थापित केंद्र परंपरागत रूप से कला बाज़ार पर हावी रहे हैं। हालांकि, दुनिया भर में बदलाव की लहर चल रही है, जिसमें एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के उभरते बाज़ार प्रमुखता हासिल कर रहे हैं। ये क्षेत्र कला बाज़ार में नई आवाजें, दृष्टिकोण और अवसर ला रहे हैं, जिससे पारंपरिक केंद्रों के प्रभुत्व को चुनौती मिल रही है। ये क्षेत्र कला उद्योग में योगदान दे रहे हैं और चुनौतियों का सामना करते हुए लगातार प्रगति कर रहे हैं।

पारंपरिक केंद्र

यूरोप और उत्तरी अमेरिका लंबे समय से कला बाज़ार के प्रमुख केंद्र रहे हैं। लंदन, न्यूयॉर्क और पेरिस जैसे शहर प्रतिष्ठित नीलामी घरों, गैलरी और कला मेलों की मेज़बानी करते हैं। ये केंद्र बिक्री पर हावी रहते हैं और वैश्विक रुझान निर्धारित करते हैं।

उभरते कला बाजार

हाल के वर्षों में, एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका जैसे क्षेत्रों ने कला बाज़ार में प्रमुखता हासिल की है। उदाहरण के लिए, चीन कला उद्योग में सबसे बड़े खिलाड़ियों में से एक बन गया है, यहाँ के संग्राहक नीलामी के रिकॉर्ड बना रहे हैं। अफ्रीकी और लैटिन अमेरिकी कलाकार भी कला बाजार में नए दृष्टिकोण और अनूठी शैलियाँ लाकर अपनी छाप छोड़ रहे है।

इन उभरते बाज़ारों को बुनियादी ढांचे और वैश्विक मंचों तक पहुंच सहित कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हालांकि, कला उद्योग में विविधता लाने की अपार क्षमता इनमें मौजूद है।

कला बाजार में आर्थिक असमानताएं

अपनी चकाचौंध और भव्यता के बावजूद, कला बाज़ार समाज में व्याप्त असमानताओं से अछूता नहीं है। धन का केंद्रीकरण, विशिष्टता और पहुंच संबंधी बाधाएं अक्सर भागीदारी को सीमित कर देती हैं, जिससे कई प्रतिभाशाली कलाकार और महत्वाकांक्षी संग्राहक हाशिए पर रह जाते हैं। कला बाजार अवसर और असमानता दोनों से प्रभावित है, जो इसे व्यापक सामाजिक–आर्थिक विभाजनों का एक सूक्ष्म रूप बनाता है। हमने आपके लिए कला बाज़ार के भीतर मौजूद व्यवस्थागत चुनौतियों की जांच की है और समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए चल रहे प्रयासों का विश्लेषण किया है।

कुछ प्रमुख भारतीय कलाकार जिनकी कलाकृतियाँ अब नीलामी में करोड़ों में बिकती है

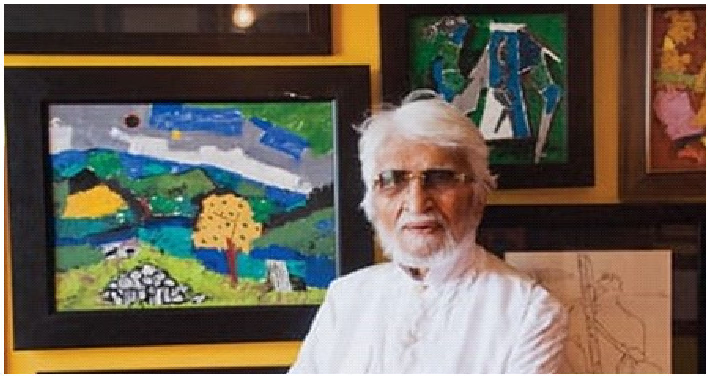

मकबूल फिदा हुसैन

भारतीय कला नीलामी में एमएफ हुसैन जैसा नाम शायद ही किसी और का हो। प्रगतिशील कलाकार समूह के संस्थापक सदस्य हुसैन की सशक्त रेखाओं और व्यापक कथाओं ने स्वतंत्रता के बाद की भारतीय कला को नया रूप दिया।

2025 में, उनकी 1954 की विशाल पेंटिंग 'ग्राम यात्रा' क्रिस्टीज़ न्यूयॉर्क में लगभग 118 करोड़ रुपये (13 मिलियन डॉलर से अधिक) में बिकी, जिसने नीलामी में बिकने वाली अब तक की सबसे महंगी भारतीय कलाकृति का नया रिकॉर्ड बनाया। लगभग 14 फुट के इस कैनवास में गतिशील आकृतियों और मिट्टी के रंगों के माध्यम से ग्रामीण भारत का चित्रण किया गया है, जो लोककथाओं और आधुनिकता के हुसैन के विशिष्ट मिश्रण को दर्शाता है।

अमृता शेर–गिल

अमृता शेर–गिल को अक्सर भारत की फ्रीडा काहलो के रूप में वर्णित किया जाता है और भारतीय कला इतिहास में उनका एक अनूठा स्थान है। यूरोप में प्रशिक्षित होने के बावजूद, भारतीय विषयों से गहराई से जुड़ी हुई, उन्होंने ग्रामीण जीवन और महिलाओं के अंतरंग चित्रों को मनोवैज्ञानिक गहराई के साथ चित्रित किया।

2023 में, उनकी 1937 की कृति 'द स्टोरी टेलर' सैफ्रॉनआर्ट की नीलामी में लगभग 61.8 करोड़ में बिकी, और कुछ समय के लिए अब तक की सबसे महंगी भारतीय पेंटिंग का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। शेर–गिल की महज 28 वर्ष की आयु में मृत्यु हो जाने के कारण, उनकी सीमित कलाकृतियों के कारण नीलामी में उनकी प्रत्येक कृति एक महत्वपूर्ण घटना बन जाती है।

संग्राहक उन्हें न केवल कलात्मक प्रतिभा के लिए बल्कि ऐतिहासिक महत्व के लिए भी महत्व देते हैं; उन्होंने आधुनिक भारतीय कला को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI06.017

सैयद हैदर रजा

एस.एच. रज़ा का अभिव्यंजनावादी परिदृश्यों से ज्यामितीय अमूर्त कला तक का सफर भारतीय कला के सबसे आकर्षक विकासों में से एक है। प्रतीकात्मक बिंदु पर केंद्रित उनकी प्रतिष्ठित 'बिंदु' श्रृंखला आध्यात्मिकता, ब्रह्मांड विज्ञान और रंग सिद्धांत का मिश्रण है।

2017 में, उनकी पेंटिंग 'गर्भधारण' लगभग 51.75 करोड़ में बिकी, जो उस समय किसी भारतीय कलाकृति के लिए एक रिकॉर्ड था। वर्षों बाद भी, रज़ा के चित्रों की कीमत करोड़ों में रहती है, खासकर उनके परिपक्व अमूर्त काल की कृतियों की। संग्राहक उनकी रचनाओं की ध्यानमग्न गुणवत्ता और प्रत्येक चित्र में निहित दार्शनिक गहराई के अहसास से आकर्षित होते हैं।

तैयब मेहता

तैयब मेहता की कोणीय आकृतियाँ और सशक्त प्रतीकवाद उनकी कृतियों को तुरंत पहचानने योग्य बनाते हैं। उनके बैल, गिरती हुई आकृतियाँ और बंधे हुए रूप व्यक्तिगत और ऐतिहासिक आघातों से उत्पन्न भावनात्मक तीव्रता को दर्शाते हैं।

2023 में, उनकी प्रतिष्ठित कृति 'ट्रस्ड बुल' नीलामी में लगभग 61.8 करोड़ में बिकी, जिससे वे अब तक के सबसे मूल्यवान भारतीय कलाकारों में शुमार हो गए। मेहता ने 2002 में ही सुर्खियाँ बटोरी थीं, जब उनकी एक कृति नीलामी में 10 लाख डॉलर से अधिक की कीमत पार करने वाली पहली भारतीय पेंटिंग बनी, जो कला बाज़ार के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण था। आज, उनकी पेंटिंग्स को भारतीय कला में उत्कृष्ट निवेश माना जाता है।

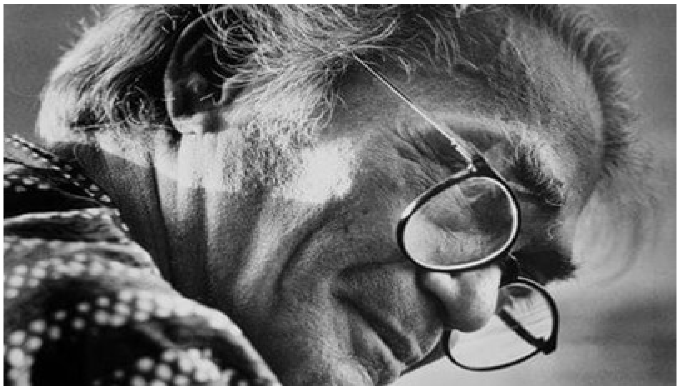

वासुदेव एस. गैतोंडे

हुसैन की कला में नाटकीयता है और शेर–गिल की अंतरंगता, वहीं गैतोंडे कैनवास पर ध्यानमग्न मौन का प्रतीक हैं। भारत के अग्रणी अमूर्त चित्रकार के रूप में व्यापक रूप से पहचाने जाने वाले, उनकी न्यूनतम शैली की रचनाएँ ज़ेन जैसी शांति का अनुभव कराती हैं।

2015 में, उनकी एक शीर्षकहीन कृति क्रिस्टीज़ में 29 करोड़ से अधिक में बिकी, जो उस समय एक भारतीय पेंटिंग के लिए एक रिकॉर्ड था। उनकी बाद की कृतियों की बिक्री 40 करोड़ के आंकड़े को पार कर गई है, जिससे नीलामी में सबसे मूल्यवान भारतीय कलाकारों में उनका स्थान और मजबूत हो गया है।

गैतोंडे की दुर्लभ कृतियाँ, जिन्होंने अपेक्षाकृत कम रचनाएँ कीं, उनकी मांग को बढ़ाती हैं। प्रत्येक कैनवास एक दुर्लभ अनुभव का अनुभव कराता है।

निष्कर्ष

कला बाज़ार एक जटिल और निरंतर विकसित होता हुआ क्षेत्र है। मध्यकालीन यूरोप से लेकर डिजिटल युग तक का इसका इतिहास कला के प्रति मानवता के अटूट प्रेम का प्रमाण है। उभरते बाज़ार, तकनीकी प्रगति और समावेशिता को बढ़ावा देने के प्रयास कला उद्योग के भविष्य को आकार दे रहे हैं। इस जीवंत क्षेत्र में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए कला बाज़ार के रुझानों को समझना आवश्यक है। चाहे आप संग्राहक हों, कलाकार हों या कला प्रेमी हों, कला बाज़ार अन्वेषण, सीखने और निवेश करने के अनगिनत अवसर प्रदान करता है।

सन्दर्भ

1. www.jansatta.com.cdn.adn.ampproject.org.
2. समकालीन कला, ललित कला, अकादमी का प्रकाशन पृ0सं0–45
3. समकालीन कला, ललित कला, अकादमी का प्रकाशन पृ0सं0–92
4. समकालीन कला, ललित कला, अकादमी का प्रकाशन पृ0सं0–48
5. https://share.google/5qalX3akT4MRRshfq
6. https://share.google/WSXFv0gwThwCfir7c